मणिपुर का लोकनृत्य

वीरेन्द्र परमार

नृत्य मानव की प्राचीनतम अभिव्यक्ति है। गीत से भी पहले नृत्य का उद्भव हुआ है। मणिपुर में नृत्य के संबंध में एक पौराणिक आख्यान प्रचलित है जिसके अनुसार नौ देवता (लाईबुंगथोउ) पृथ्वी को स्वर्ग से लेकर आए। सात देवियाँ (लाई नुदा) जल पर नृत्य कर रही थीं, उन्होंने उसे पकड़ लिया और उसे जल में फेंक दिया। इस प्रकार पृथ्वी की उत्पत्ति हुई, लेकिन पृथ्वी समतल नहीं थी। पृथ्वी को समतल करने के लिए कोमलता के साथ उस पर पैर को घुमाया गया। उसी समय से नृत्य की उत्पत्ति मानी जाती है। मणिपुरी नृत्य के इतिहास को दो भागों में विभक्त कर उसका मूल्यांकन करना चाहिए। प्रथम भाग हिंदुत्व काल से पहले का नृत्य और द्वितीय भाग हिंदुत्व काल का नृत्य। प्रथम भाग में मणिपुरी शास्त्रीय नृत्य की नींव रखी गई थी जबकि दूसरी अवधि में नृत्य का विकास हुआ। मणिपुर के इतिहास के आरंभिक काल में नृत्य, संगीत और धर्म एक-दूसरे से जुड़े हुए थे। मणिपुर के मैतै समुदाय के नृत्य को तीन वर्गों में विभक्त किया जा सकता है। (1) नृत्य की लाई हराओबी श्रेणी (2) रास नृत्य और (3) मणिपुरी नट संकीर्तन का चोलम स्वरुप। लाई हराओबा श्रेणी को शास्त्रीय नृत्य माना जाए अथवा नहीं, इस विषय पर कलाविदों में मतभेद है। रास श्रेणी के नृत्य को निर्विवाद रूप से शास्त्रीय नृत्य की पुरानी शैली माना जाता है। इसमें राधा और कृष्ण के अलौकिक प्रेम के साथ-साथ गोपियों के उदात्त और पारलौकिक प्रेम और प्रभु की भक्ति को दशार्या जाता है। यह आमतौर पर मंदिर के सामने किया जाता है और दर्शक भक्ति की गहराई में डूबकर इसे देखते हैं। रचना के अनुसार इसका प्रदर्शन एकल, युगल और समूह में किया जा सकता है। नृत्य की इस विशिष्ट शैली में सूक्ष्मता, नवीनता और आकर्षण है। नर्तकों की वेशभूषा का कलात्मक सौंदर्य दर्शकों को अभिभूत कर देता है। मणिपुरी रास एक नृत्य नाटिका उत्सव है जो श्रीकृष्ण की लीलाओं पर आधारित है। यह राधा और वृंदावन की अन्य गोपियों के साथ भगवान कृष्ण का नृत्य उत्सव है। यह श्रीकृष्ण के दिव्य प्रेम के बारे में नृत्य नाटिका (लीला) है जो मणिपुरी वैष्णव की जीवन शैली से अविभाज्य रूप से जुड़ी हुई है। मणिपुरी रास पांच प्रकार के होते हैं- वसंत रास, कुंज रास, महारास, नित्य रास और दिबा रास। भगवान श्रीकृष्ण के प्रति गोपियों का अनुराग लौकिक नहीं बल्कि दिव्य था जैसा कि अपने इष्ट देव के प्रति एक भक्त का होता है। महाभारत के अनुसार यह एक धार्मिक इतिहास है कि श्रीकृष्ण और गोपियों की लीलाएँ वृंदावन में हुईं। वसंतरास श्रीकृष्ण की प्रेम लीला पर आधारित है। इसका आयोजन शाही महल में वसंत पूर्णिमा के दिन किया जाता है। वसंतरास की उत्पत्ति जयदेव कृत 'गीत गोविन्द' के अलावा ब्रह्मवैवर्त पुराण और पद्मपुराण से मानी जाती है। वसंत के उपलक्ष्य में गोपियों ने श्रीकृष्ण के साथ होली खेली थी। जब श्रीकृष्ण प्रतिद्वंद्वी नायिका चंद्रावली के साथ होली खेलने गए तो राधा इतनी क्रोधित हो गई कि श्रीकृष्ण को उनसे क्षमा मांगनी पड़ी। इस विषय को गीत, नृत्य और

अभिनय के माध्यम से विस्तारपूर्वक बताया जाता है। चार घंटे के इस नृत्य-नाट्य को वसंतरास कहते हैं। महारास भागवत पुराण की रसपंचाध्यायी पर आधारित है। भगवान कृष्ण अपने वादे के अनुसार कार्तिक पूर्णिमा की रात को गोपियों के साथ रासलीला करने के लिए नियत स्थल (कुंज) पर पहुँचे। बांसुरी के संगीत से मंत्रमुग्ध होकर राधा और गोपियाँ अपना काम छोड़कर श्रीकृष्ण से मिलने के लिए निकल गईं। श्रीकृष्ण से मिलने पर राधा और गोपियों का वियोग दुःख दूर हुआ। उन्होंने कृष्ण के साथ नृत्य किया लेकिन शीघ्र ही उनका हर्ष विषाद में बदल गया। जब गोपियों को श्रीकृष्ण के साहचर्य का अभिमान हो गया तब कृष्ण अचानक वहाँ से गायब हो गए। कृष्ण के वियोग से गोपियाँ अत्यंत दुखी हो गईं और वे पशु-पक्षियों से कृष्ण का पता पूछने लगीं। जब वे अत्यंत दीन-हीन व विनम्र होकर श्रीकृष्ण की तलाश करने लगीं और उनका अभिमान दूर हो गया तब श्रीकृष्ण प्रकट हुए लेकिन अब वे अकेले नहीं थे बल्कि उनके साथ असंख्य कृष्ण थे। प्रत्येक गोपी के साथ एक कृष्ण नृत्य करने लगे। कुंज रास महारास लीला का संक्षिप्त रूप है। कुंज रास का प्रदर्शन आश्विन माह (अक्टूबर-नवंबर) की पूर्णिमा को किया जाता है। यह 'गोविंद लीलामृत' पर आधारित है। कुंज रास को महारास लीला का अंग माना जाता है। इसमें 'रस पंचाध्यायी' के पूर्ण पाठ का अभिनय नहीं किया जाता। राजा चंद्रकीर्ति के सहयोग से भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं का सार रूप प्रस्तुत करने के लिए नित्य रासलीला (नर्तन रास) की रचना की गई थी। इस लीला के दर्शन के लिए कोई निश्चित ऋतु या विशिष्ट दिन निर्धारित नहीं हैं। इसका किसी भी दिन प्रदर्शन किया जा सकता है। दिबा रासलीला दिन के समय में की जाती है। इसके लिए कोई ऋतु या महीना निश्चित नहीं है। आमतौर पर महल और भगवान गोविंदजी के मंदिर में नित्य और दिबा रास दोनों का प्रदर्शन नहीं किया जाता है। राजा चूराचाँद के शासनकाल में अखम ओजा तोम्बा द्वारा दिबा रास लीला का सृजन किया गया था। नाम के अनुरूप दिबा रास का प्रदर्शन दोपहर में किया जाता है।

नट संकीर्तन-नट संकीर्तन 18 वीं शताब्दी की परिघटना है। इस पर असम के सत्रिय नृत्य और ओजापाली का प्रभाव है। यह बंगाल के नव वैष्णव आंदोलन की विशिष्ट अभिव्यक्ति है। रासलीला नट संकीर्तन परंपरा का ही विस्तार है। मणिपुर के राजा चंद्रकीर्ति सिंह (1850-86 ई.) के शासनकाल में नट संकीर्तन का बहुत विकास हुआ जब 32 संकीर्तन सत्रों में 64 रास की प्रस्तुति की गई थी। नट संकीर्तन के दो स्वरुप हैं। सांगीतिक स्वरूप और 'चोलोम' स्वरूप। दोनों स्वरूपों का अपना महत्व है। दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। 'चोलोम' स्वरूप को पुनः दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। पाला चोलम और पुंग-चोलम। सामूहिक गान का कीर्तन रूप नृत्यि के साथ जुड़ा है जिसे संकीर्तन कहा जाता है। पुरुष नर्तक नृत्यन करते समय पुंग और करताल बजाते हैं। सभी सामाजिक और धार्मिक त्योहारों पर पुंग तथा करताल चोलोम प्रस्तुरत किया जाता है।

लाई-हराओबाः लाई-हराओबा मणिपुर का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और रंगीन त्योहार है। लाई-हराओबा को उमंग लाई हराओबा भी कहते हैं। यह एक पारंपरिक मैतै त्योहार है। यह त्योहार सृष्टिकर्ता ईश्वर द्वारा पृथ्वी की रचना और उस पर जीवों के निवास से संबंधित है। किंवदंतियों के अनुसार शुरूआत में 'गुरु सिदबा' सबसे बड़े देवता थे जो घोर अंधकार में रहते थे। वे जिस कमरे में रहते थे वह कमरा एक बार इंद्रधनुष

के विभिन्न रंगों से जगमगा उठा। इस घटना से वे सृष्टि के निर्माण के लिए प्रेरित हुए। सृष्टि की पूरी प्रक्रिया का उत्सव मनाने के लिए हर साल लाई-हराओबा त्योहार मनाया जाता है। इसलिए इस त्योहार को सृष्टि की प्रक्रिया का उत्सव कहते हैं। लाई- हराओबा ही नृत्य और लोकगीतों (खुनुंग इसाई) का मूल स्रोत है। लाई-हराओबा को सभी मणिपुरी नृत्यों और कुछ स्वदेशी खेलों का उत्स माना जाता है। इस त्योहार का आरंभ ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में हुआ। उस समय पुष्प, खाद्य पदार्थ आदि अर्पित करना ही मुख्य अनुष्ठान में शामिल था, बाद में इस त्योहार के साथ और अन्य अनुष्ठान और परंपराएं जुड़ गईं। इस त्योहार में उमंग लाई के नाम से जाने जानेवाले 'सिलवन' देवताओं की उपासना की जाती है। इस अवसर पर पुरुषों और महिलाओं द्वारा कई नृत्य प्रस्तुत किए जाते हैं। मोइरांग के शासक देव 'थंगजिंग' के लाई हराओबा सबसे प्रसिद्ध हैं। यह त्योहार मई महीने में आयोजित किया जाता है। यह त्योहार स्थानीय पारंपरिक देवताओं और पूर्वजों के प्रति सम्मान और श्रद्धा व्यक्त करने

के लिए मनाया जाता है। इसे देवताओं की उत्सवधर्मिता के रूप में भी जाना जाता है। यह त्योहार ब्रह्मांड के सृजन में भगवान के योगदान की स्मृति में आयोजित किया जाता है, साथ ही यह पेड़-पौधों, जानवरों और मनुष्य के विकास की स्मृति में भी मनाया जाता है। रिवाज के अनुसार इस त्योहार में लोग मूर्तियों के सामने नृत्य करते हैं। वे देवी-देवताओं और अपने पूर्वजों से आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए प्रार्थना करते हैं। समाज के वृद्ध और जवान सभी अपना पारंपरिक नृत्य करते हैं और गीत गाते हैं। इस अवसर पर नाटक भी प्रस्तुत किया जाता है जिसमें खंबा और थोइबी के जीवन को दशार्या जाता है जो एक लोककथा के नायक-नायिका हैं।

नूपा पाला : नूपा पाला को करताल चोलोम या झांझ नृत्य के रूप में जानते हैं। इस नृत्य का आरम्भ कोमल पद संचालन से होता है और धीरे-धीरे गति तेज होती है। यह पुरुषों का सामूहिक नृत्य प्रदर्शन है जिसमें झांझ का उपयोग होता है और नर्तक दुग्धधवल सफेद गेंद के आकार की बड़ी पगड़ी पहनते हैं। नर्तक मृदंग की संगत में गाते और नृत्य करते हैं। आमतौर पर नुपा पाला रासलीला नृत्य के लिए एक प्रस्तावनां या परिचयात्मक नृत्य के रूप में कार्य करता है। इसकी प्रस्तुति स्वतंत्र रूप में भी होती है। यह नृत्य और संगीत की अनूठी मणिपुरी शैली है जहाँ कलाकार पुंग की लय में गाते और नृत्य करते हैं। खंबा थोइबी नृत्य : खम्बा थोईबी नृत्य पुरुष और महिला का युगल नृत्य है जो सिलवन देवता मोइरांग के थंगजिंग के प्रति समर्पित है। यह माना जाता है कि महान नायक-खंबा और नायिका थोईबी ने भगवान थांगजिंग से पहले नृत्य किया था। भगवान थांगजिंग मणिपुर के दक्षिण- पश्चिम में स्थित गांव मोइरंग के एक मिथक पुरुष हैं। मोइरंग को समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा के लिए जाना जाता है। 'थांग-ता-इथांग-ता' एक मणिपुरी युद्ध कला है जिसका विकास मणिपुर की युद्धक पृष्ठभूमि में हुआ है। कालांतर में 'थांग-ता' मणिपुर की प्रदर्शन कला में शामिल हो गया लेकिन इसका युद्धक चरित्र बरकरार रहा। 'थांग-ता' का उद्भव उस समय हुआ जब मनुष्यं ने जंगली जानवरों से अपनी रक्षा करने के लिए अपनी क्षमता का उपयोग करना आरंभ किया। 'थांग-ता' (तलवार और भाला) आत्मरक्षा करने की कला है जिसकी एक आध्यात्मिक आधारशिला और लंबी ऐतिहासिक परंपरा है। 'थांग-ता' एक प्राचीन मणिपुरी मार्शल आर्ट है जो

मणिपुर के युद्ध के माहौल में विकसित हुई है और इसका सृजन मैतै समुदाय द्वारा किया गया है। 'थांग-ता' को इड़ेन लालींग' के नाम से भी जानते हैं जिसका अर्थ है 'तलवार और भाला की कला'। 'थांग-ता' को तीन अलग-अलग तरीकों से प्रदर्शित किया जाता है। पहला तरीका पूर्णतः आनुष्ठानिक है जो तंत्र साधना से संबंधित है। दूसरे तरीके में तलवार और भाले के साथ नृत्य का प्रदर्शन किया जाता है। तीसरा तरीका वास्तविक लड़ाई की तकनीक है। तलवार और भाला चलाने की यह एक कठिन कला है जो पूर्ण अनुशासन की माँग करता है। इसे सीखने से पहले बच्चों को अपने गुरु के सामने यह शपथ लेनी पड़ती है कि वे दुर्बल और असहाय लोगों की रक्षा करेंगे तथा समाज में न्याय स्थापित करने का प्रयास करेंगे।

मणिपुरी नृत्य में तांडव और लास्य दोनों का समावेश है। यहाँ के नृत्यि की एक दुर्लभ विशेषता इसकी लयात्म कता है। मणिपुरी अभिनय में मुखाभिनय को बहुत ज्यामदा महत्वन नहीं दिया जाता, चेहरे के भाव स्वामभाविक होते हैं। संपूर्ण शरीर का उपयोग एक निश्चित रस को संप्रेषित करने के लिए किया जाता है। आमतौर पर देखा जाता है कि नर्तक एक नाटकीय प्रदर्शन में पैरों से ताल देने के लिए घुंघरू नहीं पहनते। जयदेव द्वारा रचित 'गीत गोविन्दन' की अष्टरपदियां यहाँ बहुत प्रचलित हैं और इन्हें मणिपुर में बहुत उत्साह और समर्पण के साथ गाया जाता है तथा साथ में नृत्य भी किया जाता है। मणिपुर में 29 जनजातियाँ हैं जिनमें से अधिकांश के पास रंगारंग नृत्य की समृद्ध विरासत है। आईमोल, अनल, मोनसंग, चिरु, मोयोन, कबुई, थंगल, कोम, मरम, वाईफेई, तंगखुल, थडोऊ आदि जनजातियों के लोकनृत्य प्रकृति के अत्यंत निकट हैं। इन सभी आदिवासियों के पास रंगारंग लोकनृत्य की गौरवशाली परंपरा है। कबुई समुदाय के पास लोकनृत्य की समृद्ध विरासत है। इस समुदाय के लोकनृत्य बहुत विकसित हैं। माओ-नागा जनजाति के लोकनृत्यों में उनकी नृत्य प्रतिभा के साथ-साथ उनके रंग समन्वय की झलक मिलती है। कुकी-चीन समूह की जनजातियों के लोकनृत्य के साथ प्रस्तुत मधुर संगीत कर्णप्रिय होते हैं। इन समुदायों में युद्ध नृत्य और अंत्येष्टि नृत्य की परंपरा विद्यमान है जो अन्यत्र दुर्लभ है। मणिपुर के आदिवासी समाज में मृत्यु भी एक उत्सव है और नृत्य शोक प्रकट करने का माध्यम। बांस नृत्य चूराचांदपुर के लुशाई समुदाय का लोकनृत्य है। यह बालिकाओं द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। रंग-बिरंगे पारंपरिक परिधानों से सुसज्जित बालिकाओं द्वारा प्रस्तुत बांस नृत्य नयनाभिराम होता है। वाईफेई समुदाय के लोग नृत्य-गीत से बहुत प्रेम करते हैं। नृत्य-गीत उनके उत्सवों-त्योहारों का अभिन्न अंग है। इनकी भाषा में 'लाम' का अर्थ नृत्य होता है। मणिपुर के मोयोन समुदाय के पास लोकनृत्यों के अनेक रूप मिलते हैं। अपने पारंपरिक परिधान को धारणकर अलग-अलग पंक्तियों में महिला और पुरुष जब नृत्य करते हैं तो अद्भुत दृश्य उपस्थित हो जाता है।

संपर्क : वीरेन्द्र परमार

गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश